प्रधान मंत्री
आवास योजना-शहरी
Pradhan Mantri Awas Yojana-Urban

PMAY (U) से हुआ जीवन का अधूरा सपना पूरा
(सक्सेस स्टोरी)

सफलता की कहानी लाभुक की जुबानी

मनुष्य की जो तीन मूलभूत आवश्यकताएं हैं, वह है-रोटी, कपड़ा और मकान। इन्हीं मूलभूत आवश्यकताओं एवं अपने जीवन के सपनों को पूरा करने के लिए मनुष्य अपने जीवनकाल का अधिकतर समय अथक एवं संघर्षशील प्रयासों में लगा देता है। जी हां, आज मैं आपको ऐसे ही एक शख्स के संघर्षशील जीवन से रू-ब-रू कराने जा रहा हूं जो अपनी इन्हीं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का सपना सदियों से बेसब्र निगाहों से देखा करता था। उस शख्स का नाम है- श्रीमती जमीला बीबी, पति श्री हद्रीश खलीफा। उनकी उम्र 45 वर्ष है व वह नगर उंटारी नगर पंचायत के वार्ड संख्या 9 की निवासी हैं। श्रीमती जमीला बीबी के परिवार में उनके पति समेत कुल पांच लोग हैं जो एक साथ एक ही घर में रहते हैं।

श्रीमती जमीला बीबी के पति इंद्रीश खलीफा का पेशा कपड़े की सिलाई यानि दर्जी का है जो उन्हें विरासत में अपने पूर्वजों से मिला है। इंद्रीश खलीफा यह काम एक छोटे से दुकान में किया करते थे। इस काम में उनकी पत्नी भी उनका सहयोग करती थीं। यह दुकान उनके घर से 200 मीटर की दूरी पर नगर उंटारी के नजदीक विख्यात वंशीधर मंदिर के निकट स्थित था। यहां ये प्रतिदिन सिलाई का काम कर तथा उसी से अपना जीविकोपार्जन कर अपने झोपड़ीनुमा कच्चे घर में किसी तरह परिवार समेत जीवन का गुजारा कर रहे थे। यह मकान किसी भी मौसम के अनुकूल नहीं था, जिसमें उनके परिवार के कुल पांच सदस्य एक साथ रहते थे। चुंकि इंद्रीश खलीफा जी के परिवार की माली हालत अपना पक्का मकान बनाने के लायक नहीं थी, इसलिए वे झोपड़ीनुमा खपरैल/कच्चे मिट्टी के घर में रहने को मजबूर थे। उनकी आजीविका जैसे-तैसे चल रही थी कि वर्ष 2017 में उनके जीवन में एकाएक उस समय उम्मीद की किरण नजर आई जब उन्हें इस बात का पता चला कि सरकार गरीबों को पक्का मकान बनाने हेतु सहायता राशि प्रदान कर रही है। यह जानकारी इनके ग्राहकों ने ही बातों-बातों में उन्हें बताई। तब उन्होंने अपने ग्राहकों से ही प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के बारे में पूरी जानकारी हासिल की।

साथ ही उन्होंने उनसे इसके आवेदन-पत्र में लगने वाले कागजात के संबंध में पूरी जानकारी ली। अपने शिक्षित एवं जागरूक ग्राहकों की मदद से इंद्रीश खलीफा जी ने अपनी पत्नी श्रीमती जमीला बीबी (लाभुक) के नाम से सारे कागजात तैयार किया तथा चतुर्थ घटक के तहत नगर निकाय कार्यालय में अपना आवेदन जमा किया। चार माह के बाद एकाएक उनके जीवन में खुशियों का आशियाना बन जाने का सपना सच होता हुआ लगने लगा जब उन्हें किसी ग्राहक ने बताया कि उनके आवास की स्वीकृति मिल गई है। इस खबर को सुनकर उनकी आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े और उन्होंने उस ग्राहक से मिलकर उन्हें तहेदिल मुबारकबाद दी। श्रीमती जमीला बीबी ने कहा कि यह लम्हा उनके जीवन के सबसे बेहतरीन लम्हों में से एक था, क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि अब उनका भी खुशियों का अपना आशियाना होगा। इसी कड़ी में उन्होंने आवास स्वीकृति उपरांत नगर निकाय कार्यालय में जाकर एकरारनामा कर अपने आवास निर्माण कार्य को प्रारंभ कर दिया। घर के सभी सदस्यों ने निर्माण कार्य में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने निर्माण कार्य में सिर्फ एक राजमिस्त्री की सहायता ली।

सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना से लाभान्वित होकर इनका पूरा परिवार आज जिन्दगी के ऐसे पड़ाव पर पहुंच गया था जहां इनकी खुशियों का अपना आशियाना बनकर तैयार था जो हर मौसम में सुकून और शांति से रहने के लिए अनुकूल था।

निर्माणाधीन आवास

पूर्ण आवास